144
P
582
H
MICROFILM

5 / 1911

1281 / 10/21

891.431
Up1N

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
8 AUG. 1931

वन्देमातरम्

नमक का गोला

भूखे जमा का करना तकलीफ भोख की है ।
थोड़ा ज़रब का देना तकसीम सीख की है ॥

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—

पं० रामचन्द्र उपदेशक

(देहली) पलवल जी. आई. पी.

एजेन्ट—बी. एस. भंगाला एन्ड ब्रादर्स, पलवल ।

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा

प्रथम बार
१०००

मूल्य -)

ईश्वर प्रार्थना

वन्देमातरम्

अब [illegible] के [illegible] हमारी स्तुति करता [illegible] तुम्हारी ।
[illegible] मोहन [illegible] तुम्हारा [illegible] पर [illegible] ॥
[illegible] तुम पे [illegible] सहारा ।
[illegible] ऐसे हो [illegible] ॥
[illegible] को तुमने अब [illegible] तुम्हारी ।
भारतवर्ष में [illegible] हो बलधारी ॥
अब भारत के दुःख दूर करेंगे ये गांधीजी [illegible] ।
ईश्वर ईश्वरी [illegible] ॥

तर्ज राधेश्याम

दोहा—[illegible] अभिमान ।
मोहन [illegible] का करना है गुनगान ॥
इसी देश [illegible] आये दोनों [illegible]
ये केवल मोहन रहे, ये हैं मोहनदास ॥

जिनपास कुछ [illegible] थे वे, तो यह [illegible] हैं ।
वे [illegible] थे तो यह [illegible] है ॥
वे [illegible] काले थे, ये [illegible] दिखलाते हैं ।
वे बंसी मधुर बजाते थे, ये [illegible] हैं ॥
वे [illegible] में थे, ये [illegible] के हैं ।

[NATI]ONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 582
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

वे कुल महाभारत के थे ये नेता सत्याग्रह के हैं ॥
वे दूध गाय का पीते थे, इनको बकरी का भाया है ।
गोवर्धन उधर उठाया था, भारत को इधर उठाया है ॥
वे मथुरा से द्वारका गये, ये अफ्रीका रह आये हैं ।
वे माखन चोर कहाते थे, ये नमक चोर कहलाये हैं ॥
उनका भी भक्त जमाना था इनका भी भक्त जमाना है ।
उन मोहन का [illegible] था, इन मोहन का [illegible] है ॥
तब भी भारत निर्भय था और अब भी यह भारत है निर्भीक
इस कारण राधेश्याम कहा, अब मिलका मोहनदासको भी

(३)

कवाली ।

अय मेरे भाईयो टुक ध्यान लाना चाहिये
गांधी का जो हुक्म हो उनको बजाना चाहिये ॥
है महात्मा जी का कहना शान्ति से काम का ।
शान्ति पर पूर्ण क्रिया करके दिखलाना चाहिये ॥
तेज होकर तेज अपना है वह है शान्ती ।
शान्ति मय सत्याग्रह दिल में जमाना चाहिये ॥
दिल की हालत क्या कहूँ बेदिल हुये काबू न [illegible] ।
जो हैं अन्दोलन उनको शर्म आना चाहिये ॥

त्याग कर सब कुछ विदेशी हो स्वदेशी का चलन ।
छोड़ कर खद्दर का मलमल सर चढ़ाना चाहिये ॥
गाढ़ा धोतर पहिनने से है शान हिन्दुस्तान की ।
इसलिये स्त्रियों को अब चर्खा चलाना चाहिये ॥
और वस्तु जो है खाने पीने की उनको विचार ।
नमक की तो शर्त करना और कराना चाहिये ॥
हम तो वहीं से नमक खुद घर बनाने लगे ।
भारतवासियों को घर २ नमक बनाना चा हुये ॥
गर नमक घर के बनाने से सजा सरकार दे ।
शांत मय सत्याग्रह कर जेल जाना चाहिये ॥
जेल क्या है घर हमारा हम हैं हरदम जेल में ।
कोई भी दीखे न स्वतन्त्र कह यह बताना चाहिये ॥
हम हमारे बच्चे २ होरहे जेली तमाम ।
पाये बिन स्वराज्य जेला जमाना चाहिये ॥
जेल तो तोफाह इक स्वराज्यका हमको इनाम ।
नमक खाने बन्द का इनाम पाना चाहिये ॥
शान्ति कर शान्त को शान्त में समझाना था ।
गांधी सच कह रहा है घर २ सुनाना चाहिये ॥

४

जगत में अगर गांधी प्यारा न आता

तो हरगिज नजर ये नजारा न आता ॥
न भारत में स्वराज्य की चाह होती ।
जो भारत को आंखों का तारा न आता ॥
न होते कभी कुछ दुनियां से राही ।
जो लेकर सुदर्शन दुलारा न आता ॥
लगाते न कल्लो किनारा न आता ।
जो मदाद को मोहन प्यारा न आता ॥
न होता कभी अहद चांद का पूरा ।
जो इमदाद को गांधी प्यारा न आता ॥

बहर नानकशाही—डंडा

(५)

जब महात्मा गांधी हुए सरकार के मेम्बर ।
सब पोल पाल देख धरा पेट के अन्दर ॥
सौ वर्ष कीया राज नर्साद्दे के सिकन्दर ।
ये जुल्म ढाने लगे इस देश के अन्दर ॥
फिर महात्मा गांधी ने सोचा था जतन को ।
आजाद करें चलके हम अपने वतन को ॥
वे मोतीलाल नेहरु थे प्राणों से प्यारे ।
जाते सलाह लेने वो हिन्द दुलारे ॥

कहते थे महात्मा जी क्या राय है तुम्हारी ।
यह भूखी मरी जाती है यह हिन्द हमारी ॥
सुनते ही जवाहरलाल ने झाड़े को उठाया ।
आजाद बनो देश ने जो दुःख उठाया ॥
जा जा हर एक गांव में लोगों को सुनादो ।
कपड़ा विदेशी बेचना तुम बिलकुल छुड़ादो ॥
यह काम नहीं एक का तन हर एक लगादो ।
हुक्का अफीम भांग को तुम जड़ से उड़ादो ।
पीते शराब बहुत से दौलत को लुटा कर ॥
छोड़ेंगे महात्मा जी इसे जड़ से उड़ाकर ।
कौमों में रहो देश देश में अब काम रहा है ॥
आखिर को गांधी जी का फरमान यही है ।

भगत सिंह और द दत

इस आखरी जमाने में कोई यार न देखा ।
हर यार को देखा तो वफादार न देखा ।
मतलब के सभी बनते हैं यारो गमख्वार ॥
पर दत्त जैसा दिल्ली कोई यार न देखा ।
मैंने जो खबर उनकी अखबार में पढ़ी ॥
पैरों में थी तो बेड़ियां हाथों में हथकड़ी ।

जकड़े हुए पुलिस ले आई शेर को ॥
फौजों ने घेरा हुआ था कौमी दुलार को ।
ऐसा था डब्बल पहरा कि चिड़ी न फटके ॥
लेकिन वो शेर मर्द खड़ा था बे खटके ।
दिलमें थी उसके ख्वाहिश कि मिलूँगा यार से ॥
आंखों को खूब भरूँगा उसके दीदार से ।
इतना था बेकरार उसके इन्तजार का ॥

फिर जकड़े हुए लायें भगतसिंह सरदार को ।
आखिर वो दोनों यार गले लिपटने लगे ॥
जितने थे वहां सबके दिल धड़कने लगे ।
ऐसा नजारा देखकर पत्थर भी पिघल गये ॥
पत्थर के दिल के आंखों से आंसू निकल गये ।
आखिर भगतसिंह ने इनकिलाब कहा ॥
जिन्दा रहे फिर मिलेंगे गर मिलायेगा खुदा ॥
फिर दत्त को जकड़े हुये शाह जोर से ।
अलाहतन करा दिया दूर गये शेर से ॥

(७)

भजन

(नमक का गाना)

नमक का गोला पहुँचा सात समन्द्र पार।
नहीं अम्बर बीच गया नहीं धरती बीच समाया है॥
ऐसे ऊँचे २ महल खड़े थे उनसे भी नहीं टकराया है।
गोल मेज के बीच जाकर कर दिया पनियादार। न०
जालिमों ने जोर लगाया कानून बँधे रहे बस्ते में॥
उनके लिये तेज पड़त है हमें पड़े है सस्ते में।
सरसर करता चला यहां से पँहुचा हरली पार॥
नमक बनाने वालों पै न गोलो है न गोला है।
न हाथ में लकड़ी सादा रखते कँधे पे पड़ा इक झोला है
न हथियारों से लड़ते उड़ी है रफतार॥ न०
बहुतसे जालिमों ने मिटाना चाहा मिटी न लालीलालोंकी
नमक का गोला चला यहां अकल बिगड़गई लँदन वालोंकी
मिलजुल कर रामचन्द्र समझावे है जालिमसरकार।
नमक का गोला हहुंचा सात समन्द्र पार॥

(८)

चर्खा

मुझे गांधी का चर्खा मंगादो पिया।
बिना चर्खा के होना गुजारा पिया॥
बिन चर्खे के सुन पिया है जीवन धीक्कार।

चर्खा मोकू लादयदो तुम तकली लेयो समार ।
इस चर्खे ने लन्दन में शोर किया ॥
मुझे गांधी का चर्खा मंगादो पिया ।
चर्खा इसे समझो नी भारत का यह सरताज है ।
इस चर्खे की गूञ्ज से कांप विदेशी भाज हैं ॥
अबतो चर्खे से प्रेम बढाओ पिया । मु
मशीन गन समझो इसे सुन मेरे भरतार ॥
चर्खा चलने से पिया कांप रही सरकार ।
लँकाशायर का अब तौ बुझादो दिया ॥
चौमठ किरोड़ बन जायगें जो खादी को लोगेधार
रामचन्द्र सबको कह रहे जल्दी करो सुधार ।
बुद्धा मूर्ख का है ये भेष पिया ॥
मुझे गांधी का चर्खा मंगादे पिया ॥

(६)

भजन

तुम छोड़ विदेशी संग जंग आजादी में आओ ।
करो सब मिल कर एक समाज
विदेशी आय तभी सब भाज
दो० जाय विदेशी भाज के सुनलो चतुर सुजान ।
भारत माता दीन के तभी बचेंगे प्राण ॥

तुम भी नहीं मानो कहर मान के लन्दन को जाओ
करो आपस में मिल कर सूत ।
बना सच्चे भारत के पूत ॥

दो० सच्चे सेवक तुम बनो तो भारत के सब वीर ।
मिल कर भारत मात की हरो सकल भो पीर ॥

तोड़ करो सुधार देश भारत का ।
घर घर झन्डा गड़ाओ तुम ॥
मरें भूखन हाय किसान ।
बनावें बन्दर अपनी शान ॥

दो० किसान मरें भूकन सुनो भारत के नरनार ।
अ याचारी कर रहे हम पर अत्याचार ॥

तोड़ अब हम मा ो कहा फिर क्या पथर खावो तुम
कहें यों रामचन्द्र नादान
लिहां में बन्सो प न सुजान ॥

दो० लिहां बीच रहने बन्सी ि ह सुजान ॥
मुखि ा गीरी छोड़कर स च्चे बने महान ।
बुन्दलेन यों कहें सब मिल झ डा गान कराओ ॥
तुम छोड़ विदेशी संग ंग आजादी में आओ ।

(१०)

गजल

भारत का भार बहिनो जल्दी से लो उठाई ।
चर्खे के चक्र से अब लन्दन को दो हिलाई ।
जब से विदेशियों का भारत में हुआ आना ॥
तब से हा मेरी बहिनो हम पर पड़ी तबाही । भारत०
गोली मशीन तन से करते हैं वार हमपर ॥
आ म के भारत से तुम गोरों को दो भगाई । भा०
भारत हमारी माता कहती है अब पुकारी ॥
मिल करके जल्दि बहिनो सब कष्ट दो मिटाई । भा०
इन्द्र भी आज खुश हैं करते हैं मदद हमारी ॥
इक दम घटायें आकर जल भ हुआ अनाई । भा०
खादी को पहन करके मन में खुशी मनाओ ।
अब आपस में मेल करके मलमल को दो जलाई । भा०
घर घर से मिल के बहिनो भन्डो को साथ लाओ
दिखला के एक[illegible] को [illegible]ओं को दो दहलाई । भा०
कहते हैं रामचन्द्र इसमें कसर न समझो ।
बून्द कवी ने आकर कविता नई बनाई भा०
कहते हैं बून्द सागर मन में यकीन करलो ।
होगा स्वराज्य बेशक गांधी ने लौ लगाई ॥ भा०

(११)

रसिया

भारत भयो बहिन दुखारी यह मिट जायँ अ थारी ।
जा दिन से भारत में बहना इनके कदम बढाया है ॥
वादिन से भारत माता को इनने कष्ट दिखाया है
रोय रोय भारत माता अब कहरही हाय पुकार ।
किसी दिन यह देश हमारा माला माल खुश हाली था
दुध दही और अनाज घृत से भारत कहीं न खालीथा
जब से आये बहिन विदेशी कर रहे हाय खुवारी
जिस दिन जंग छिड़ा जमन से हाहा हमारी खाते थे
पास गांधी बावा के दौड़ २ जाते थे ।
वाके बदले में बहिना रोलेट बिल कर दिया जारी यह
जमना लाल, ज्वाहर बहिना भारत की उजयाली हैं ।
भारत वागे बहारका वहिनो गांधी देखो माली है ॥
अरज में रामचन्द्र तिहारी यह मिट जांये अ० ।

(१२)

फैसन

मूँछ मुडा फैशन चैला देखलो इस देशमें ।
मर्द भी रहने लगे है ये होजड़े के भेश में ॥

(१२)

इस फैशन ने कर दिया सबका सत्यानाश ।
धर्म कर्म को तो नहीं रक्खा किसी ने पास ॥
उठते सवेरे बाबू हाथों में लेवें बूट ।
पूजा व पाठ है सही समझो न इसमें झूठ ।
देने को धूप मुंह में सिगरट लगा लई ॥
जलने लगे हैं बाल सब मुँछें कटा लईं ।
रुमाल रेशमी है देखो हाथ में लिया ॥
जिससे कि जूता झाड़ कर मुँह को सफा किया ।
कहते हैं खड़े मूतने का है नहीं कोई डर ॥
जैसे मूतते हैं कैसे ऊंट और घोड़े खर ॥
घर पढ़ाने मास्टर को आया है कोई नर ।
तो कह दिया साफ ऐनक छोड़ आये घर ॥
कोल्हू के बैल माफिक चश्मे लगायके ।
करते हैं बेइमानियां फैशन दिखायके ।

कव्वाली

(१३)

हिन्दुस्तान के इस फैशन ने खोदी सभी कमाई है ।
आमदनी से खर्च ज्यादा करते शर्म न आई है ॥
दो की टोपी कमीज रुपया की नकटाई लो आने को ।
दाई का चश्मा चार आने का कालर टाई लगाने को ॥

कम २ कम दो रुपये समझो फिर जिसके सिलवाने को
आसवें रोज़ [illegible] आन कर उनको खुलवाइ है ॥ १ ॥
आढ़े आन की खड़ुआ तुम समझो [illegible] चैन के [illegible] आने को
बिगड़ जाय [illegible] से कम नहीं लगता समझाने को
नहीं [illegible] से कम लगता [illegible] साबुन बूट मंगाने को ।
ब्रुश और पालिश का शीशी दोनों में [illegible] आने को ॥
[illegible] और [illegible] का कायम कुछ आने बतलाये हैं ॥
कंघा साबुन तेल उन्होंके [illegible] मैं लाऊँगा ।
अदरक [illegible] इत्यादि का काम [illegible] आने समझाऊँगा ॥
[illegible] खर्च [illegible] लिखूँ फन्द कहाँ तक गाऊँगा ।
सिगरट का जिस कदर खर्च है वह भी तुम्हें गिनाऊँगा
तीन आने का कैंचा सिगरट एक रोज़ मंगवाइ है ॥
आजकल लो गिना था जो लड़का यह भी फैशन ।
एक माल भी [illegible] नहीं सकता बिन सवारी ऐसा सज्जन
सवारी का [illegible] रखना पड़ता मजबूरन ।
चलती हो तो काज़ माफ़ मैं बतलाता हूँ सब ०
एक आना रोज़ाना इसके लेता [illegible] है ।

[illegible] कवी

शेर बकरी का झगड़ा हुआ आज कल।
लाज रखनी ये मौला तेरे हाथ है॥
जितना जी चाहे हम पर सितम ढाओ तुम।
सब्र वालों के हर दम खुदा साथ है॥
जुल्म अब इस क़दर हम पै होने लगे।
जान बे फायदा हाय खोने लगे॥
अब्र बारां भी अब हम पै रोने लगे।
गोलियाँ पड़ रही यह बरसात है॥
हम तो हैं इस क़दर दिल दुखाये हुए।
और चीरे फलक के सताये हुए॥
दाग पर दाग है दिल पै खाये हुए।
जो सताता है हमको वह कमजात है॥
हो चुके हैं जुदा हम तो घर बार से।
क्या डराता है तू हमको तलवार से॥
जान आती हैं बेड़ी की झनकार से।
हथकड़ी पहनना क्या बड़ी बात है॥
कोई लीडर हमारा न तुम से डरा।
जेलखाने को समझा रजाये खुदा॥
जान जाने को हरदम समझता रहा।
ईद का दिन है या वस्ल की रात है॥
दूर हो जावेगा हिन्द से रंजो ग़म।

जान जाये तो जाये नहीं कुछ अलम ॥
बन्दरों को मकां में न रक्खेंगे हम ।
यही हर वक्त अपना ख्यालात है ॥
फैर एक दम करो या बम्ब फैंक दो ।
हमतो मौजूद हैं चाहे कुछ भी करो ॥
लाल कुर्ती या अगिया का फारम करो ।
हम ये समझेंगे कि आज शुबरात है ॥
अब तो देहली में निकलेंगे वालेंण्टिर ।
कोर बच्चों की होगी इधर और उधर ॥
तुमने छेड़ा अगर इनको भाई डीयर ।
बस समझ लेना दिन की अब रात है ॥
रात दिन दुश्मनों को यही फिक्र है ।
देखिये अब सज़ा जुल्म की क्या मिले ॥
हिन्द वाले न रक्खेंगे अब चैन से ।
ग़म यह लिपटा हुआ जान के साथ है ॥
ऐ पूरन अब फिर जोश से कहो ।
काम में हर वक्त तुम अपने पूरे रहो ॥
जान जाये तो इस वक्त दिल से कहो ।
खास तेरी सहादत्त की यह सत है ॥

गजल नं० २

भगतसिंह तुम्हें फिर से आना पड़ेगा।
हकूमत को जलवा दिखाना पड़ेगा॥
जो चोरी से धोके से मारा है तुमको।
मज़ा इसका इनको चखाना पड़ेगा॥
उठो वीरशेरों यही वक्त है अब।
तुम्हें लाल झण्डा उठाना पड़ेगा॥
हकूमत से कह दो खबरदार होजा।
यही गम तुझे भी उठाना पड़ेगा॥
हमारे कलेजे में खूं बह रहा है।
इसी खूं में तुझ को बहाना पड़ेगा॥
न कानून है कुछ न है कुछ हकूमत।
शहनशाह जवाहर बनाना पड़ेगा॥

गजल नं० ३

लगा करके फाँसी ही क्या मान होगा।
रहे याद तू भी परेशान होगा॥
अगर जान माँगो तो क्या तुमने माँगा।
मेरी जान से तुझको नुकसान होगा॥
लगा के तू फाँसी करो शाद दिलको।
वह तेरे ही रोने का सामान होगा॥

नहीं होगा इस से अमन याद रखना ।
तेरा तङ्ग हर दम यहाँ औसान होगा ॥
हम आते हैं लेकर जन्म फिर दुबारा ।
वही संग में सब बम्ब का सामान होगा ॥
दलेंगे हम छाती पै फिर मूँग तेरी ।
उसी बम्ब का हर जहाँ पै व्याख्यान होगा ॥
हमें आशा पूरी नज़र आ रही है ।
कि कुछ दिन का तू और महमान होगा ॥
चढ़ादे तू फाँसी समझ हमको काँटा ।
स्वर्ग का हमें यह तो दीवान होगा ॥
सफल हुआ उसका जन्म लेना जहाँ में ।
जो अपने वतन पै यों कुरबान होगा ॥
अमर यहाँ पै कब तक भला तुम रहोगे ।
आखिर तो प्राणों का अवसान होगा ॥
प्रभु से करा लेंगे इन्साफ वहाँ पर ।
फिर देखेंगे कितना वहाँ अभिमान होगा ॥
सुनो आज भारत के तुम नौजवानों ।
मेरे बाद तुम्हारा ही इमतहान होगा ॥
यह व्यर्थ नहीं जायेगा खून हमारा ।
स्वतन्त्र इसी से हिन्दोस्तान होगा ॥

गजल

रा कहो दया के दुलारे।

करो कृपा हमपे हम हैं सेवक तुम्हारे

कोइ दीन दुखिया शरण आपकी में ॥

जिसके सदा काम तुमने सँवारे ॥ १

कृपा तुम्हारी जिन पर दयालु रहेगी ॥

तो हो लाख बैरी करें क्या बिगारे ॥

भला पक्षपात करके न गांधी ॥

हैं सब रियाया के है प्राण प्यारे ॥

रामचंद्र पे कृपा चाहिये आपकी ॥

रहैं वृन्द सुख तुम्हारे सहारे ॥

सूचना

एक कार्ड आने पर हर एक मर्ज़ की दवा भेजी जायेगी

नोट—दूसरो प्रकार लगदवाफ़ेमा "दौलत हमारा लासानी।

इलाज करें हर एक मर्ज़ का खर्च कहूँ मैं तुमसे जानी॥

लाइलाज का इलाज करते हैं यह ख़बर करो तुमको जानी॥

फ़ायदा चाहो इनाम भेजो फिर क्या होती हानी॥

पता है मुकम्मल नाम है ऊपर तहसील लिखदो तुम ख़ास

रामचंद्र का मत दुख पाओ कार्ड डालो उनके पास॥

हमारे यहाँ हर प्रकार की पुस्तकें स्टेशनरी का सामान और साइनबोर्ड बनाये जाते हैं। सामान किफ़ायत से मिलता है और शीशे पर हाथकी बनाई हुई तसवीरें भी मिलती हैं।

भारत बुक ऐजन्सी नई सड़क देहली में हर प्रकार की पुस्तकें किफ़ायत से मिलती हैं।

B. S. Mangla & Brothers, Palwal.